अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शोधकर्ता
शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम

शोधनिर्देशक
प्रा. डॉ. दस्तगीर एस. देशमुख
सहयोगी प्राध्यापक
हिंदी विभाग लोकसेवा कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
औरंगाबाद

प्रस्तावना

अब्दुल बिस्मिल्लाह आधुनिक हिंदी साहित्य के कथाकार एवं कवि के रूप में उभर सामने आये है। उन्होंने कथा–साहित्य का सृजनकर न केवल हिंदी साहित्य को समृध्द किया है बल्कि जन–जन की पीड़ा को आत्सात किया है और अपने पाठकों और समीक्षकों को भी उस पीड़ा से पुरी तरह संवेदन"ाील बना दिया। वे साहित्यकार के उच्च आसन पर बैठकर जनता के प्रति केवल सहानुभूतिही व्यक्त नही करते है। अपितु आम व्यक्ति से घुलमिलकर उस के ही एक अभिन्न अंग बनकर उसके सुख–दुःख को पुरे ह"ोल्लास और व्दे"ा संवेदन से जीते है। इन अर्थों में उनका साहित्य अनुभूति की प्रमाणिकता से ओत–प्रोत होने के कारण सह जज्बा भाविक और पठनीय है। उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए पाठक को स्वाभाविक संवेदनाओं का स्वाद मिलता है उनका साहित्य अपनी साधारणता से असाधारण बन जाता हैं। साहित्यकार सार्वभौमिक होता है। उसकी चेतना दूरदृष्टि वाली चेतना होती है। साहित्यकार के सामने व्यक्तित्व का प्रश्न एक अनिवार्य प्रश्न नहीं है। फिर भी उसके व्यक्तित्व का साहित्य पर प्रभाव पड़ता है, लक्षण जारी होते हैं और जहाँ कहीं भी उसकी रचना में विकृति या अस्वस्थता निर्माण होती है। या फिर विलक्षण स्वास्थ्य निर्माण होता है, तब उसको पहचानने में व्यक्तित्व की पहचान सहायक सिद्ध होती हैं। व्यक्ति, व्यक्ति के विचारों का प्रतिफलन होता है, आदर्शों की परछाईं होती है, प्रवृत्तियों का आँकड़ा होता है। व्यक्तित्व में साहित्यकार के सामाजिक परिवेश का परिचय मिल जाता है। और आंतरिक तत्वों का भी एहसास हो जाता है। व्यक्तित्व को निर्मित करनेवाले तत्व कई होते हैं। एक तो उसका कुल और पारिवारिक परिवेश। दूसरा उसके जातिगत संस्कार। तीसरा उसकी शिक्षा–दीक्षा। चौथा उसका कार्य–क्षेत्र और लोगों के साथ मेल–मिलाप के गुण और पाँचवाँ उसकी विशेष अभिरुचियाँ तथा अन्य विद्वानों एवं साहित्यकारों का उस पर प्रभाव। फ्रान्सिस बेकान ने कहा, "किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी कलम है।"**1** "Pen not the word alone is the personality of a man"

"व्यक्तित्व शब्द 'पर्सनेलिटि' (Personality) लैटिन शब्द 'पर्सोना' (Person) से बना हुआ है। 'पर्सोना का अर्थ है 'मुखौटाग्रीक' कलाकार रंग मंच पर अपनी पहचान छिपाने के लिए मुखौटे का प्रयोग किया करते थे। आगेच लकर 'पर्सोना' शब्द का अर्थ बदल गया। मनुष्य दुसरे को कैसा दिखाई देताहै? इस अर्थ में धीरे–धीरे 'पर्सोना' शब्द का रूपांतर 'पर्सनॉलिटि' अर्थात् व्यक्तित्व के रूप में लिया जानेलगा।"**2** "व्यक्तित्व शब्द भाव वाचक संज्ञा है। व्यक्ति के क्षेत्र में जिन गुणों या वि"ोषताओं का समावे"ा होता है। वे सब व्यक्तित्व के अंतर्गत आते हे। अर्थात् व्यक्ति की महत्वपूर्ण वि"ोषता उस का व्यक्तित्व है। व्यक्ति की ऐसी वि"ोषता उसे दुसरों अलग बनाती है। किसी व्यक्ति की वि"ोषताओं का समदाय ही व्यक्त्वि है।"**3**. मानक हिंदी शब्दको"ा के अनुसार "व्यक्तित्व शब्द व्यक्ति के युग्म से बना है जिस का अर्थ है–व्यक्त होने की अवस्था या भाव।"**4** किसी व्यक्ति की निजी वि"िाष्ट क्षमताएँ, गुण, प्रवृत्तियॉ आदि जो उस के उद्दे"यों, कार्यों व्यवहारों आदि में प्रकट होती है, और जिनसे उस व्यक्ति का सामाजिक रूप स्थिर होता है। व्यक्ति के मनोभाव एवं विचार उसके कार्य तथा वाचिक, अंगिक क्रियाओं में, हाव–भाव में प्रकट होते हैं, साथ ही व्यक्ति का मन सामाजिक सांस्कृतिक, परिवे"ा से संस्काारित होता है। ये संस्कार भी उसके क्रिया कलाप, हवा–भावों में अनायस व्यक्त होता। व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्तर्निहित गुणों का प्रका"ित रूप है। उसे व्यक्त करने की क्षमता को ही व्यक्तित्व कहा जाता है।

हिंदी वि"वकों"ा के अनुसार– "व्यक्तित्व की अवधारणा इस प्रकार दी गयी है व्यक्तित्व शब्द किसी व्यक्ति के सामाजिक मूल्य के सूचक रूप में प्रयोग किया जाता है।"**5** इससे तात्पर्य उस संपूर्ण प्रभाव से है जो एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति पर डालता हे। उद्दीपक के रूप में क्रियाओं का भी हमे"ाा प्रभाव पड़ता है। जिनका वह अनय व्यक्तियों के बीच उपक्रम करता है। ये परिणामात्मक शक्तियॉ ऐसे परिवर्तन उत्पन्न करती हे। दुसरे शब्दों में व्यक्ति आत्मक परिक्षण करता हैं, तथा बाहय जीवन संगठन, एकता और स्थिरता उत्पन्न करके अपने अन्तर्वेयक्तिक स्वभाव में अपनी आत्मधारणा का विकास करता है। प्रत्येक सर्जक की प्रतिभा महत्वपूर्ण होती। साहित्य कृतियों में साहित्यकार का व्यक्तित्व प्रसंगतः कुछ मात्रा में अनायास प्रतिबिम्बित होता है। रचनाकार के अहम् का संस्कार उसकी आत्मभिव्यक्ति कें रूप में व्यक्त होता है।

रचनाकार का अहम् समाज के सामूहिक अहम के साथ तादात्म्य होकर उसके आनंद का कारण बनता है। रचनाकार का व्यक्तित्व युग परिवे"ा से प्रभावित होता है। उपरोक्त सभी इकाईयों से मिल जुलकर दिव्य प्रतिभा से निखरकर साहित्यकार का व्यक्तित्व विकसित होता है। व्यक्ति के कुछ बाहय एवं आंतरकि तत्वों से व्यक्तित्व का निर्माण होता हैं। इन तत्वों का विवेचन व्यक्तित्व निरूपण में अर्न्तभूत है। लेखक का परिवार, परिवे"ा, स्वभाव प्रवृत्तियॉ, युगीन वातावरण, जीवन में मिलनेवाले अवसर, हाथ से फिसले हुए सुनहरे क्षण, कुछ गलतियॉ कुछ कमजोरियॉ कुछ क्षमताएँ, कुछ सबलताएँ, जीवन मूल्य दृष्टि, आद"ाों के प्रभाव आदि अनुभवों से बने हुए दृष्टि से लेखक का मानवीय व्यक्तित्व निर्माण होता है। यह व्यक्तित्व समाज और साहित्यिक दायित्व में प्रतिबध्द, सजग होकर एक साहित्यकार का सर्जक व्यक्तित्व भी बनता है। सारांष में साहित्यकार का निजी व्यक्तित्व साहित्यकार का व्यक्तित्व के सामंजस्य से बना हुआ एक विलक्षण व्यक्तित्व होता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह साहब के साहित्य को प्रस्तुत करने से पहले उनका जीवन परिचय कर लेना औचित्यपूर्ण होगा।

1.1 अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व :

आधुनिक हिंदी उपन्यासकारों में अब्दुल बिस्मिल्लाह का अपना अनूठा स्थान है। वे बहुमुखी एवं प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। गद्य और पद्य पर उनका अपना समान अधिकार रहा है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, एकांकी, कविता, बालोपयोगी कहानियॉ, अनुवाद आदि विविध विधाओं पर लेखन किया है। उनका रचना संसार व्यापक और विस्तृत है। उनकी अपनी एक दिषा और जीवन दृष्टि है। उनके उपन्यासों में मुस्लिम विम"ा के जिंदगी के द"ान होते है। उपन्यासकार ने अपने उपन्यास साहित्य में उनके जीवन के साथ साथ विभिन्न संदर्भो को उठाया है। यह संदर्भ वर्तमान विसंगतियों से गुजरते हुए मुस्लिम समाज के अस्तित्व पर गहरानेवाले संकोटों के विविध कोनों तथा आम आदमी के जीवन में आनेवाली समस्याओं को दर्षन कराते है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक स"ाक्त उपन्यासकार के रूप में हमारे सामने आते कवि एवं साहित्यकार होने के साथ–साथ वे एक पत्रकार, विचारक, अनुवादक, संपादक, सामाजिक कार्यकर्ता और एक सफल प्राध्यापक है। इस अद्वितीय साहित्यकार का साहित्य मात्र चिंतन की उपज नहीं अपितु जीवनानुभवों का परिहास भी है। इस साहित्यकार के व्यक्तित्व को समझे बिना उनके कृतित्व का सही आकलन नहीं किया जा सकता। अतः प्रथमतः उनके बहुआयामी व्यक्त्वि पर प्रका"ा डालना आव"यक है।

1.1.1 जन्म :

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक समर्थ कथाकार हैं। उनका जन्म ई. सन् 5 जुलाई, 1949 इ. सन् को इलाहाबाद जिले के 'बलापुर' नामक गॉव में हुआ। वे मेरे साक्षात्कार के समय कह रह थे कि, "मेरे जन्म के पूर्व एक घटना घटित हो चुकी थी मुझसे पूर्व मेरी मॉ के तीन बच्चे हो चुके थे, मगर उनमें से कोई भी जीवित नहीं बचा था। एक व"ा से अधिक की उम्र में ही गूजर गए थे।"**6**

1.1.2 नामकरण :

अब्दुल बिस्मिल्लाह साहब के नामकरण का भी एक इतिहास बहुत ही प्रसिध्द एवं प्रचलित है–"जब वे मॉ के गर्भ में थे, तो गॉव में एक फकीर आया था। उसकी आवाज सुनकर उसे कुछ खैरात देने के लिए माँ बाहर निकली। माँ से कुछ खैरात प्राप्त करके उस फकीर ने उनकी माँ को दुआ में कहा तुम्हारा परिवार सदा हराभरा रहे। जिस माँ के पहले ही तीन बच्चे जन्म के उपरान्त एक वर्ष के बीच में ही मर जाते है, तो मेरा परिवार कैसे हरा–भरा रहेगा? "मेरे बच्चे तो जिंदा ही नहीं रहते, फिर इस दुआ से क्या फायदा? यह फकीर से कहती है। फकीर ने कहा मैंने तो दुआ इस बच्चे को दी है जो तुम्हारे पेट में है। यह जिएगा और इकबालमंद होगा। हॉ पैदा होने पर इसका नाम 'बिस्मिल्लाह' रखना।"**7**

लेखक कहते है कि, फकीर के कहने पर 'बिस्मिल्लाह' का नाम रखा गया। किंतु जब स्कूल में नाम लिखाने गया तो गुरूजी ने 'बिस्मिल्लाह' से पहले 'अब्दुल' जोड़ दिया। 'अब्दुल बिस्मिल्लाह' बहुत अटपटा–सा नाम है। मगर माँ–बाप और गुरूजी द्वारा जोड़ दिए गए नाम को उनकी कृपा समझकर स्वीकार कर लिया और अंत में 'अब्दुल बिस्मिल्लाह' यह नामकरण हो गया। इस तरह अब्दुल बिस्मिल्लाह का जन्म हुआ और उनके जन्म के कुछ दिन उपरांत ही उनकी माँ की मृत्यु हो गई और वे माँ के प्रेम से वंचित हो गए।

1.1.3 परिवेश :

अब्दुल बिस्मिल्लाह जी का जीवन परिवे"ा इलाहाबाद की पावन भूमी पर बीता। इलाहाबाद में गंगा, यमुना एवं सरस्वती नदियों का संगम है। अतः इसे हिन्दुस्तान का नाभि–स्थल कहा जाए तो अनुचीत नहीं होगा। गाँव के परिवेश में उनका स्वभाव एक मस्त आलम की तरह था। वे आज़ादी से क्रंदन कर सकते थे, जोर से चिल्ला सकते थे, लोक आहलाद् को भरपूर सुन सकते थे। यह परिवेश उनको कभी सुखद और कभी दुःखद प्रतीत होता था। इलाहाबाद में आम की अमराइयों की अधिक संख्या है। यहाँ हमेषा ठण्डी हवाएँ लहराती हैं। ऐसे परिवे"ा में लेखक का जीवन बीता। लेखक स्वातंत्रयोत्तर वातावरण में फूले थे। इसका प्रभाव उनकी रचनाओं पर दिखाई देता है।

1.1.4 बचपन :

अब्दुल बिस्मिल्लाह का बचपन बहुत ही कठिनाई से बीता। माँ बचपन ही गूजर गयी थी। इसी कारण व बचपन से ही मातृप्रेम से वंचित रह चुके थे।" माँकी मृत्यु के कारण वे वहीं का सारा कारोबार छोड़ कर अपने जन्म स्थान बलापुर पहुँच चुके थे।"**8** लेकिन अब्दुल बिस्मिल्लाह को अपना बचपन और मध्य–प्रदे"ा का वह रमणीय जंगली इलाका रह–रहकर याद आ जाता है। जैसे ही वे बलापुर आ गए वैसे ही उनके साथ दुर्व्यवहारों का सिलसिला शुरू हो गया। पिताजी के न कमाने के कारण भैय्या और भाभी के यहॉ बोझ बनकर रहना पड़ा। इस मौके का फायदा उठाते हुए भाभी ने भी उन पर काम का बोझ डाल दिया। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उनको अपने दो वक्त के खाने के लिए मजबुरन भाभी का काम करना पड़ता था। देखा जाए तो उनकी यह उम्र पढ़ने लिखने की थी, लेकिन मजबुरन उन्हें खाने के बदले बचपन से ही बकरियॉ चराना, पानी लाना, लकड़ियॉ लाना यहॉ तक कि चदरियॉ तक धोनी पड़ती। इतना ही नहीं उन्हें अपने बचपन में गोबर भी लाना पड़ता था। अपने पिता के साथ स्वयं उन्होंने ने भी कई विषमताओं को झेला। संघर्ष करते हुए भी उनके मन में जीने की एक लालसा थी। वे पढ़–लिखकर एक बड़ा और अच्छा इंसान बनना चाहते थे। लेकिन बीच में ही उनके पिता की अकस्मात मृत्यु के कारण वे बचपन में ही यतीम हो गए। माता–पिता का साया उनके सर हट गया था। वे अपनी जिंदगी से हर पल संघर्ष करते रहे।

1.1.5 परिवार :

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक सहज संवेदनशील व्यक्ति हैं। वे अपने माता–पिता की इकलौती संतान है। उनका परिवार आकार में छोटा रहा हैं। किंतु परिवार की आर्थिक स्थिति नाजुक होने के कारण उनके पिता रहने के लिए ससुराल चले गए। वहीं जाने के बाद पिताजी नौकरी तथा व्यापार करते रहे। उनके पिताजी हमे"ाा अब्दुल बिस्मिल्लाह साहब से कहते थे, "किसी जमाने में अपना का एक लंबा परिवार था। जिसमें उनके पिता अपनी पॉच बहनों और दो भाइयों के साथ रहा करते थे। उनमें से केवल एक ही बहन बची थी, भाई सब गूजर चुके थे। अब्दुल बिस्मिल्लाह के बड़े अब्बू अपने इकलौते पुत्र के साथ बचपन से ही गायब थे और दादाजी मुझे लेकर परदेस चले गए थे। मंझले भाई के पुत्र अपने परिवार के साथ घर पर रहा करते थे। वे हमे"ाा आत्मवत दूसरों को देखते हैं, और इस कारण उनके व्यक्तित्व में एक व्यापक मैत्री का भाव लक्षित हुआ, जिसे वे अपने उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' में कहते हैं, ''नन्हें बच्चे भी कभी मुझे अवयस्क समझते थे तभी तो पड़ोसी के बच्चों की शिकायत किया करते थे।"**9** अपने मित्र सभी एक सादृश्य भावना से समरूपता से जुड़े हुए मानते थे। 'अतिथि देवो भव' में मोमिन का एक शेर का उद्धरण देते है–"उम्र तो सारी कटी इश्के–बुताँ में मोमिन, आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमाँ होंगे।"**10** मोमिन जैसे शायर मीर की परम्परा के थे जिन्होंने लिखा था– "मीर उन नीमबाज़ आँखों में सारी मस्ती शराब की–सी है या फिर 'जौंक' की तरह।"**11** इसी तरह उनके विषयों में कहा जा सकता है कि बिस्मिल्लाह जी की तबीयत कुछ ऐसी ही थी। वे जिन्दगी में चैन पाने की शख्सियत लेकर ही आए। बहुधा देखा जाता है कि समाज के लीडर राजनैतिक नेता नहीं होते हैं, बल्कि उत्कृष्ट कवि और साहित्यकार जैसे होते हैं। क्योंकि

कृति या लेखक ही परम्परागत साधु जनों की भांति किसी का कायाकल्प कर सकते हैं। इस तरह उनका परिवार आर्थिक विपन्नताओं और पारिवारिक समस्याओं से गुजरता रहा।

1.1.6 ि”ाक्षा :

अब्दुल बिस्मिल्लाह जी को पढ़ाई के लिए बड़ा ही संघर्ष करना पड़ा। उन्हें कई समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। उनकी प्रारंभिक ि”ाक्षा मध्य प्रदे”ा के मंडला जिले में हुई। मंडला जिले की विशेषता यह है कि यह इतिहास के नक्शे कदम–कदम पर मिलता है। इनका घरेलू माहौल नीम की छाया में पलती तुलसी की तरह कभी कड़वी तथा कभी मीठी और कभी सुस्त तथा कभी चुस्त रहता था। बिस्मिल्ला को पढ़ाने की किसी की भी इच्छा नहीं थी लेकिन पढ़ाई के प्रति उनमें दृढ़ इच्छा और अटूट आत्मवि”वास था। इसी आत्मवि”वास के सहारे वे एक अच्छा इंसान बनना चाहते थे। बिस्मिल्लाह और उनके पिता रात–रात बैठकर यह सोचते कि अब उन्हें क्या करना चाहिए और जब वे पढ़ाई का रास्ता चुनते तो हर रि”तेदार का दरवाजा खटखटाते, पर वहॉं उनके हाथ आती सिर्फ निरा”ाा, असफलता।

इस प्रकार बाब–बार उनके पढ़ाई का सिलसिला टूट जाता। उनके पिताजी कभी–कभी सोचने लगते कि, पढ़ाई जरूरी है, या स्वाभिान? यह प्र”न बार–बार बिस्मिल्लाह को भी परे”ाान करता रहा। लेकिन इसके जवाब में उन्हें एक ही बात समझ में आती थी कि अगर जीवन इंसानों की तरह बिताना है, तो उसके लिए षिक्षा ही जरूरी हे। अंततः अत्यंत कठीन परिस्थितियों से जुझते हुए उन्होने अपनी प्रारभिक ि”ाक्षा पूर्ण की।

1.1.7 हायस्कूल की ि”ाक्षा :

बिस्मिल्लाह की हायस्कूली ि”ाक्षा मिर्झापुर में शुरू हुई। उन्हें अपनी हायस्कूल की ि”ाक्षा ग्रहण करते समय अनेक समस्या का सामाना करना पड़ा। वे अपनी बहन तथा बुआ के यहाँ रहा करते थे। बिस्मिल्लाह ने अपने रि”तेदारों को ही माता–पिता के समान माना था। उनकी हर हिदायत को वे वरदान मानते थे। वहाँ उन्हें पानी लाना, चमड़ो पर नमक लगाना, बीड़ियॉं बनाना, लकड़ियॉं लाना आदि काम करने पड़ते थे। उन्हें उस काम के बदले दो वक्त का खाना मिल जाता था। कभी–कभी बिस्मिल्लाह को लगता था कि, रि”तेदारों की सेवा करने के लए भगवान ने मुझे जन्म दिया है। कुछ ऐसी ही मानसिकता से गुजरते हुए बिस्मिल्लाह को ि”ाक्षा लेनी पड़ी थी। इस तरह अपने रि”तेदारों के यहाँ काम करके हायस्कूल की ि”ाक्षा प्राप्त की।

1.1.8 उच्च ि”ाक्षा :

उन्होंनें मजदूरी करके अपनी पढ़ाई जारी रखने का प्रयास किया। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने मैट्रिक पास होने के बाद मिर्झापुर कॉलेज से बी.ए. किया। बी.ए. करते वक्त भी उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन्होंने जिंदगी के उतार–चड़ावों को पार करते हुए, इलाहाबाद वि”वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एम.ए. किया। तथा उसी वि”वविद्यालय से डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। उनकी धारणा में समाज में उन्मुक्तता के साथ सम्मिलित होना स्वाभाविक है।

1.1.9 नौकरी :

अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने जीवन में अनेक छोटी–मोटी नौकरियाँ की थी। व्यवसाय के रुप में अब्दुल बिस्मिल्लाह ने नौकरी का पेशा अपनाया। शिक्षा लेने के बाद छोटी–मोटी नौकरियाँ करते रहे, फिर बनारस चले गए। एक कॉलेज में दस साल पढ़ाया, फिर शिक्षा–आन्दोलन से जुड़े और जेल गए। उन्होंने बनारस में 'कदम' नामक प्रगतिशील विचारों की पत्रिका निकाली। ई. सन् 1984 से केन्द्रीय विश्वविद्यालय जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली के हिन्दी विभाग अध्यापन कार्य किया। ई. सन् 1988 में सोवियत संघ की यात्रा की। तथा उसी वर्ष इंडोनिशिया में संपन्न अफ्रो–एशियाई लेखक सम्मेलन में भाग लिया। पोलैण्ड में विजिटिंग एसोसिएट प्रोफेसर रहे। फिर भी उनका लेखन कार्य बराबर चलता रहा। फिर ई. सन् 2002 में म्युनिख (जर्मनी) गए और फिर वहाँ से वापस आने पर आप नरंतर जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं। अतिथि अध्यापक के रूप में तीन वर्ष के लिए रूस में कार्य कर रहें है। आज संप्रति जामियॉं मिलिया इस्लामिया वि”वविद्यालय, नई दिल्ली के हिंदी विभाग में प्राध्यापक के रूप में सेवा निवृत्त होकर लेखन कार्य कर है।

1.1.10 प्रेरणा :

प्रत्येक महान रचनाकार के पीछे एक प्रेरणा स्रोत होता है। उनके आत्मीय मित्र एवं साहित्यकार उनके प्रेरणा–स्रोत रहे। उपन्यासकार बिस्मिल्लाह की प्रेरणा स्त्रोत गंगा का अमृत है। 'जिस देश में गंगा

बहती है' नामक चलचित्र में एक गीत मुखरता है, उस गीत का तात्पर्य अब्दुल बिस्मिल्लाह पर शब्दशः खरा उतरता है:–

"होठों पे सच्चाई रहती है
जहाँ दिल में सफाई रहती है।
हम उस देश के वासी हैं,
जिस देश में गंगा बहती है।"**12**

महाकाव्य और उपन्यास भी गंगा की उन्मुक्त धारा के समान जीवन के प्रवाह का एक दर्पण है। यह दर्पण ही उनका प्रेरणा स्रोत है जो बराबर दिशादर्शित करती रहती है। अब्दुल बिस्मिल्लाह एक स"ाक्त उपन्यासकार हैं। उपन्यासकार प्राचीन काल के वाल्मिकि जैसे कवि के समकक्ष होते हैं। महाकाव्य और उपन्यास में इतना ही भेद रहता है कि एक में गद्य विधा है और दूसरे में पद्य विधा है। भारत भूमि में गद्य–पद्य की प्रवृत्तियाँ प्रारंभ से ही बनी रही हैं। अधिकतर लोक–गीत और लोरियाँ पद्य में ही होते हैं। और उनमें परम्परा के प्रति एक आस्था और श्रद्धा प्रकट की जाती है। हम ज़मीन पर लेटे हुए बड़ों की गुफ्तगू सुनते हुए कई बातों को अपने अवचेतन में समा लेते हैं। इन्हीं बातों से हम बराबर जीवन के समकक्ष पक्षों के बारे में विवेचन करते हैं। कालान्तर में अपने उपयोग के लिए कुछ निष्कर्ष हम निकाल लेते हैं। हमारा चरित्र इन्हीं निकले हुए आदर्शों से बनता है। बिस्मिल्लाह साहब के मन में क्लांति थी। वे जीवन की सड़ी गली मान्यताओं को सुधारना चाहते थे। इसलिए उनके उपन्यास यथार्थवादी बने।

1.2 अब्दुल बिस्मिल्लाह के व्यक्तित्व की वि"ोशताएँ :

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के दो रूप दिखाई देते है। अंतरंग व्यक्तित्व और बाहय व्यक्तित्व। आचार–विचार, जिज्ञासा, स्फूर्ति, आदि से अंतरंग व्यक्तित्व का दर्षन होता है। रहन–सहन, रंगरूप, कद–काठी, के"ाभूषा, वे"ाभूषा, आदि से बाह्य व्यक्तित्व का द"र्ान होता है, तो उनके व्यक्तित्व के भी अनेक पहलुओं के द"र्ान होते है। निःसंदेह उनमें साहस, धैर्य, प्रेम, भावुकता, उदारता और संवेदन"ाीलता महत्वपूर्ण हैं। उनके व्यक्तित्व की वि"ोषताएँ निम्नलिखित रूप से देखी जाती है।

1.2.1 रहन–सहन :

अब्दुल बिस्मिल्लाह दुबले–पतले तथा छरहरे बदन के व्यक्ति है। उन्हें देखकर कोई भी व्यक्ति कल्पना नहीं कर सकता कि वे एक कवि, लेखक और समिक्षक है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के सामान्य व्यक्तित्व में एक असामान्य साहित्यकार का दिप है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह "5 फुट 8 इंच के पतले बदन के व्यक्ति हैं। पहले वह हल्की पतली मूंछे रखते थे, किंतु अब क्लीन शेव में दिखते है। उनके गौरवर्णी चेहरे पर लंबी नाक और घनी–काली भौहो के नीचे आंखों में धर्म, द"र्ान और साहित्य की त्रिवेणी बहती रहती है। वे धार्मिक रूढ़ियों से ऊपर उठे हुए हैं, सभी धार्मिक ग्रंथो का ज्ञान होने की सहजता से उन्होंनें 'मुखड़ा क्या देखे' अपन्यास में पं.रामवृक्ष पांडे की कन्या के शुभ विवाह के अवसर पर पं.सृष्टिनारायण पांडे और ि"ावपूजन तिवारी में शास्त्रार्थ की बातों का बहुत ही बारीकी से वर्णन किया है। उन्होंने दुनिया के सभी धर्मग्रंथों का पारायण किया है, इसलिए वे उनकी बारीकयों से अच्छी तरह परिचित है। इससे पता चलता है कि, उनका अध्ययन और निरीक्षण कितना सूक्ष्म है।

1.2.2 पहनावा :

अब्दुल बिस्मिल्लाह के लंबे तथा छरहरे बदन पर अक्सर कुर्ता–पाजामा ही नजर आता है। हमे"ाा पैरों में चप्पल रहती है। मौसम के अनुसार उनकी पो"ााख बदलती रहती है। सर्दी के दिनों में वे पैरों मे जूते और बदन पर सूट पहनते है। घर में भी वे अक्सर कुर्ता–पाजामा में ही रहते है। कभी–कभी लुंगी भी बांधते है। विषे"ा समारंभ के अवसर पर टाई और कोट का भी उपयोग करते है। वे हमे"ाा साधारण पो"ााख में ही नजर आते हैं।

1.2.3 संघर्शमयी जीवन :

अब्दुल बिस्मिल्लाह का पूरा साहित्य पढ़ने के प"चात् हमारे सामने अनेक सवाल उभरकर आते है, कि उन्होंने अपने जीवन में कौन से काम नहीं किए है? कितने संघर्ष किए है। हर जीच प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। उनका कार्य ही संघर्ष करते रहना है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के बचपन में ही माता–पिता का देहांत हुआ। वहीं से उनके संघर्षमय जीवन का प्रारंभ हुआ है। रि"तेदारों के यहाँ रहते समय अनेक काम करने पड़े जैसे जंगल से लकड़ी लाना, कुएँ से खींचकर पानी भरना आदि। साथ ही पढ़ाई भी शुरू थी। इतना सारा काम करने के प"चात् भी उन्हें अपनी सौतेली बहन तथा अन्य रि"तेदारों से

अनेक कटु बाते सुननी पड़ती थी। उन्हें उनके रि"तेदारों ने कई बार घर से निकाल दिया। ऐसे अनेक दुःखद एवं कठिन स्थितियों से अब्दुल बिस्मिल्लाह ने संघर्ष किया हैं। उन्होंनें बचपन में हड्डियाँ बीनना, बीड़ी बनाना, बहन के बच्चों की टट्टी भी फलिया साफ करना, बकरिया चरवाना, पेंटींग करना टेस्ट वर्क सिंचाई योजना के अंतर्गत तालाब खोदना, मिट्टी ढोना तथा सड़क बनाने के काम किए है। साइकिलों की मरम्मत करने का भी काम करना पड़ा और होटलों में बर्तन मांजने के भी काम किए। स्पष्ट है कि उन्होंने अपने जीवन में अनेक अनुभव पाए है। सामान्य मजदूर से लेकर एक अध्यापक तथा चर्चित साहित्यकार तक की संघर्षमयी यात्रा बहुत ही कठिनाई से पूरी की है। उन्हें अपनी मंझिल तक पहुंचते समय गरीबी, अर्थाभाव, पारिवारिक संघ"ा आदि समस्याओं का कड़ा मुकाबला तो करना ही पड़ा, साथ ही बीमारी का सामना करना पड़ा था। उन्हें पेट की लंबी बीमारी के साथ दवा और अर्थाभाव के कारण संघर्ष करना पड़ा। उन्होंनें बीमारी के इलाज के लिए अनेक वनस्पतियों का औषधी के लिए उपयोग किया जैसे इमली का काड़ा बनाकर पिया, जंगल में जाकर एक वनस्पति की मूली चबाई और बेहो"ा हो गए। इतना सारा कष्ट सहने के प"चात् उन्होंने अपनी सौतेली बहिन से कहा, मुझे दस पैसे दे दीजिए, भूसी के लिए। वह भी उन्हें नहीं मिले। उनमें 'जीवन के सामाजिक, आर्थिक संघर्ष को समोट लेने की छटपटाहट सब कुछ दिखाई पड़ती है। अब्दुल बिस्मिल्लाह हमे"ाा संघर्ष करते रहे हैं। समस्याओं से जूझना उनके व्यक्तित्व का अंग बन गया है। वे बचपन से लेकर आज तक जो व्यक्ति अपने दुःख को पचाकर उसी में ही सूख की अनुभूति करते है, वही संघर्षमय जीवन में सफलता प्राप्त करते है। बिस्मिल्लाह की कृतियॉ 'समर शेष' है और 'जहरबाद' के अध्ययन से उनके कर्म"ाील जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है। क्योंकि यह दोनों रचनाएं सिर्फ उपन्यास के रूप में नहीं तो आत्मकथा के रूप में प्रसिद्ध है। वास्तवतः यह आज के समाज जीवन में अवि"वसनीय लगता है। इसी तरह उन्हें बचपन से लेकर आज तक अनेक प्रकार के संघर्ष करने पड़े है।

1.2.4 होनहार व्यक्ति :

अब्दुल बिस्मिल्लाह को बचपन से ही पढ़ाई में रूचि है। उन्हें अपनी पढ़ाई का प्रारंभ बहुत ही प्रतिकुल परिस्थिति में किया था। अपनी पढ़ाई के दौरान बहुत ही संघर्षमय स्थिति से जूझना पड़ा है। कड़ी–से–कड़ी समस्या का सामना करने की ताकत, जिद, लगन और निष्ठा के द"ान उनमें होते हैं। वे बचपन से ही तेजबुद्धि और होनहर छात्र थे। वे कहते है, ''मेरी पढ़ाई इतने अनपेक्षित और नाटीय ढंग से शुरू हो जाएगी, यह मैने कभी सोचा नहीं था। इस तरह की चीज मेरे लिए अत्यंत सुखद और रोमांचकारी थी और इसका असर यह हुआ कि अत्यंत कठिन शर्तों पर भी मैंने अपनी पढ़ाई शुरू कर दी।"**13** इण्टरमीडिएट में उन्होंने अच्छे नंबर प्राप्त किए थे। इसी वजह से तो उन्हें प्रिंसिपल साहब ने अगली पढ़ाई के लिए पितावत् सहारा दिया और उनके खाने और रहने की सुविधा छात्रावास में ही की थी। मैने प्रिंसिपल साहब को अपनी स्थिति से अवगत कराया तो वे खामो"ा रहें। कुछ देर बाद सिर्फ इतना कहा उन्होंने, तुम अपनी पढ़ाई देखो, बाकी चीजें मेरे उपर छोड़ दो। उनमें कु"ाग्र बुद्धि तथा होनहर छात्र के सभी गुण विद्यमान थे। कई बार उनकी पढ़ाई में रूकावटें भी आती थी। इस तरह उन्हें अपनी पढ़ाई के समय अनेक छोटे–मोटे काम करने पड़ते थे। उन्होंने सिर्फ पेंटिंग ही नही, टेस्टवर्क का पाईप वाला काम भी किया है। उन्हें पढ़ाई के समय इन सभी समस्याओं का तो सामना करना पड़ा। इस बात से ज्ञात होता है कि, वे अपनी पढ़ाई के लिए कोई भी शर्तें और कष्ट उठाने तथा सहने को तैयार थे। हम कह सकते हैं कि, वे एक सहन"ाील, आत्मवि"वास से पूर्ण तथा लगन में वि"वास करनेवाले दृढ़ संकल्पी तथा संघर्षकय जीवन बितानेवाले इंसान रहे है।

1.2.5 भावुक :

अब्दुल बिस्मिल्लाह साहब बहुत ही भावुक व्यक्ति है। भावुकता व्यक्ति का अभिन्न अंग है। व्यक्ति कितना भी कठोर और निर्दयी क्यों न हो, वह कभी–न–कभी भावुक बनता है। वे सिर्फ किसी आत्मीय की मृत्यु या दुःख पर ही नहीं, तो अध्यापन करते समय भी एकाध धर्मस्प"ार्ी या संवेदन"ाील विषय को लेकर भावुक हो जाते है। अपनी कविता 'घर की चिट्ठी' का पाठ करते हुए वे अपने को रोक नहीं पाते और रो पड़ते है। उनकी यह कविता एक ग्रामीण औरत की पीड़ा और दुर्द"ाा पर आधारित हे। शायद इस कविता के माध्यम से उन्हें अपनी माँ का दुर्द"ापूर्ण भरी जीवन गाथा वर्णन हैं। वे अपनी माँ की मृत्यु की याद कर 'ाोक व्यक्त करते हुए रोते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि, उनका स्वभाव भावुक है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह में स्वाभिमान कूट–कूटकर भरा हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभिमान होता है, परंतु उसकी मात्रा कम–अधिक होती है। बचपन से ही अब्दुल बिस्मिल्लाह पर अनेक मुसीबतें टूट पड़ी,

अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। बचपन में ही माता–पिता का देहांत हो गया। तत्प"चात् रि"तेदारों ने घर से निकाल दिया था। फिर भी वे घबराये नहीं स्वाभिमान से उन मुसीबतों का संघर्ष करते रहें। वे स्वाभिमान से जिना चाहते थे। खुद कष्ट करना चाहते थे। वे काम करना चाहता थे। कोई भी काम। इसीलिए उन्होने बचपन में होटलों में बरतन मांजने का काम स्वीकार किया। और अपनी पढ़ाई पूरी करने का प्रयास किया।

1.2.6 अध्ययन"ीलता :

अब्दुल बिस्मिल्लाह को बचपन से ही पढ़ने का शौक रहा है। पढ़ाई के दौरान उन्होंने आत्मवि"वास और लगन से संघर्ष का मुकाबला किया है। उन्हें कहीं भी एकाध कागज का पुर्जा या समाचार पत्र का पृष्ठ मिलता, तो वे बारीकी से पढ़ते थे। इससे वे कितने अध्ययन"ील छात्र या व्यक्ति हैं इसका पता चलता है।

1.2.7 संवेदन"ील :

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक संवेदन"ील कथाकार के रूप में परिचित है। साथ ही उन्होंनें धर्म ग्रंथो का भी अध्ययन किया है। उनका कवि मन ही नहीं, उनके पूरे साहित्य में चित्रित अतिसूक्ष्म वर्णन ही उनके संवेदन"ील मन का परिचायक हे। समाज के पिछड़े तथा निम्नवर्ग की अनेकानेक समस्याएँ तथा उन पर होनेवाले अन्याय अत्याचार आदि का स"ाक्त और संवेदनापूर्ण वर्णन उन्होंनें 'दंतकथा' में एक मुर्गे के माध्यम किया है। अपने साहित्य में हिंदू–मूस्लिम समाज में प्रचलित रूढ़ि, परंपरा और कुप्रथाओं के साथ ही साप्रदायिक कटुता का चित्रण भी संवेदन"ील रूप में किया हैं। सामान्य व्यक्ति के जीवन की पीड़ा का संवेदन"ील वर्णन अपने साहित्य में किया है।

1.2.8 प्रेरणादायी :

बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व युवको के लिए प्रेरणादायी और प्रोत्साहित करनेवाला है। वे बचपन से युवकों के प्रेरणा–स्त्रोत इस अर्थ में हैं कि उन्होंने बचपन तथा युवावस्थ से लेकर प्रौढ़ावस्था तक अनेक कठिनाईयों, परे"ाानियों और संघर्षों को बड़े उत्साह और धैर्य के साथ झेला है। नवयुवकों के लिए यह एक आद"ार्ा हे। उनके 'समर शेष' है और 'जहरबाद' न आत्मकथात्मक उपन्यासों के नायक वे स्वयं रहें है। उन्होंने अपने जीवन में आनेवाली समस्याओं का डटकर सामना किया हें इससे उनके व्यक्तित्व का प्रभाव और प्रेरणा नवयुवकों के मानस पटल पर रह सकती है।

1.2.9 मार्क्सवादी विचारधारा :

अब्दुल बिस्मिल्लाह प्रगति"ील रचनाकार हैं। उनके उपन्यासों में शोषित एवं संघर्षमयी जीवन को उबारा गया है। सिर्फ उपन्यासों में ही नहीं, तो पूरे साहित्य में मार्क्सवादी विचारधारा प्रवाहित हुई है। उन्होंनें यज्ञार्थवादी प्रगति"ील विचारधारा के माध्यम से भविष्य के विकास को सूचित करने का पूरा प्रयास किया है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य के विचारणीयता में एक एकता, निरंतरता, प्रयोगजन्य प्रगति और वैचारिकी दृष्टि के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के भाव दृष्टिगोचर होते हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाह मार्क्सवादी प्रगति"ील विचारों के होने की वजह से उनके उपन्यास, कहानी तथा अन्य साहित्य में व्यवस्था–विरोध, रूढ़ि, प्रथा, परंपरा, सामाजिक विसंगतियाँ, धार्मिक तथा अंधवि"वासों का विरोध, अन्याय अत्याचार के प्रति विद्रोह, किसान मजदूर, चुढ़ीहार और बुनकर वर्ग के प्रति सहानुभूति दृष्टिगोचर होती है। मुस्लिम समाज में प्रचलित तलाक प्रथा का भी उन्होंने विरोध किया है। उनके प्रगति"ील विचारों को एक नया रूप मिला है जिसका पूर्ण परिपाक 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' में हुआ है। तलाक के बाद का सत्तार और 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' का लतीफ शरीयत का उल्लंघन करते हुए बगैर हलाल किए अपनी–अपनी बीवी के साथ रहने लगते है। सत्तार अपने पिता के कहने से तलाक देता है और लतीफ ताड़ी के न"ो में। सत्तार इस तरह के तलाक को तलाक नहीं मानता जो अपनी मर्जी से न दिया गया हो। इसलिए तलाक के बाद का सत्तार कहता है "मेरे और साबिरा के बीच में कोई कानून आडे नहीं आएगा। मैं इस तरह के कानून को नहीं मानता जो बीवी और शौहर को नाहक अलग कर दे.. ...।"**14** एक जागरूक कलाकार या लेखक हमे"ाा प्रगति"ील विचारों को प्रश्रय देता है और प्रतिगामी शक्तियों का विरोध करता। इन सभी अन्याय अत्याचारों के प्रति उन्होंनें अपने साहित्य द्वारा विद्रोह की प्रेरणा देने का प्रयास किया है। इससे वे प्रगति"ील तथा मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक रहे हैं यह स्पष्ट होता है।

1.2.10 बुनकरों के प्रति आस्थावान :

अब्दुल बिस्मिल्लाह के मन में हमे"ाा निम्न और पिछड़े वर्ग के प्रति प्रेमभाव तथा आस्था कूट कूटकर भरी हुई परिलक्षित होती है। इसका परिचय उनके साहित्य का अध्ययन करने के प"चात् होता है, क्योंकि उनके पूरे साहित्य में हमे"ाा निम्नवर्ग को न्याय दिलाना और उनकी छोटी–छोटी समस्याओं का अंकन करन

है। उन्होंनें स्वयं दस वर्ष तक बनारस तथा आस पास के परिवे"ा में रहकर उनके जीवन को बहुत ही नजदीक से देखा और परखा है। बनारस तथा उसके आसपास के परिवे"ा ने उन्हें मजदूर बुनकरों के प्रति आकर्षित किया। गिरस्तों से होनेवाले शोषण को उन्होंनें न्याय दिया और मजदूर बुनकरों को उनके अधिकारो से परिचित किया हैं। इससे स्पष्ट है कि, उनमें निम्नवर्ग के बनारस के शोषित बुनकरों के प्रति आस्था का भाव पर्याप्त मात्रा में था।

1.2.11 संपादक :

अब्दुल बिस्मिल्लाह सिर्फ लेखक, कवि, साहित्यिक तथा समीक्षक ही नहीं है, बल्कि वे संपादक, उपसंपादक और संस्थापक भी है। मित्र प्रका"ान लिमिटेड में 'माया' नामक पत्रिका के उपसंपादक के रूप में कार्यरत थे। साथ ही वे कदम पत्रिका के संपादक रहें है। यह पत्रिका उन्होंनें और कामरेड उत्तमचंद ने मिलकर चलाई थी। अब इसे मऊनाथ भंजन (उत्तर प्रदे"ा) से डॉ.जयप्रका"ा 'धूमकेतु' चला रहे हैं।

1.2.12 विदे"ा यात्रा :

अब्दुल बिस्मिल्लाह ने विदे"ा जाकर वहाँ के वि"वविद्यालयों में विजिटिंग एसोसिएट प्रोपफेसर के रूप में हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु कार्य किया है। उन्होंनें ई. सन् 1988 में सोवित संघ की यात्रा की उसी वर्ष इंडोनी"िया में संपन्न अफ्रो– ए"ियाई लेखक सम्मेलन में ि"ारकत। पोलैंड में रहते हुए हंगरी, जर्मनी, प्राग और पेरिस की यात्राएँ की। साथ ही ई. सन् 1993–95 के दौरान वार्सा यूनिवर्सिटी, वार्सा (पोलैंड) में विजिटिंग एसोसएट प्रोफेसर रहें। और आज कल वे ई. सन 2003 ते 2006 तक के लिए रूस में बिजिटिंग एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत रहे है।

1.2.13 अनुवाद :

अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य का अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनके 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास का उर्दू में तथा मैकमिलन इंडिया द्वारा अंग्रेजी में भी अनुवाद प्रकाि"ात हो चुका हे। साथ ही इसका मराठी में भी अनुवाद हो रहा है। वे एक 'रचनाकार या चिंतक ही नहीं, मनुष्य होने के साथ–साथ एक चतुर और बौद्धिक बनारसी भी हे। उनकी बुद्धि तार्किकता और युक्तियों का लोग लोहा मानते है। वे एक कु"ाल रणनीतिकार है। इसी वजह से ही उन्होने दस वर्ष तक बनारस में वास्तव्य किया और वहाँ के जुलाहों या बुनकरों के समाज जीवन तथा उनकी अनेक समस्याओं का विविध अंगों से और सुक्ष्मता से अध्ययन कर 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' जैसी मौलिक कृति हिंदी साहित्य को दी। उनका दुसरा उपन्यास 'ज़हरबाद' का मराठी में अनुवाद हुआ है। 'दंतकथा' उपन्यास का उर्दू और मराठी में अनुवाद हो चुका है। उनकी अनेक कहानियों का मराठी, पंजाबी, मलयालम, बंगला, जपानी, तेलगू, उर्दू, रूसी तथा अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

1.2.14 पुरस्कार :

नयी पीढ़ी के स"ाक्त कवि एवं कथाकार के रूप में अब्दुल बिस्मिल्लाह जी की पहचान है। उन्होंने बहुत सारा समृध्द साहित्य लिखा है। वे एक कथाकार के रूप में हिंदी साहित्य जगत में ख्याति प्राप्त की है। उनके स"ाक्त और यथार्थ कृतित्व का परिचय उन्हें प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान से मिलता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह को उनके साहित्य को लेकर विविध संस्थाओं ने अनेक पुरस्कार देकर विभूषित किया है।

1. 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' इस उपन्यास ने उन्हें 'रेणु' और 'प्रेमचंद' की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। इसी उपन्यास पर 'केडियॉ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।
2. 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास को ई. सन् 1987 सोवियत लैंड नेहरू एवॉर्ड, मध्य प्रदेष का केडिया पुरस्कार प्राप्त हुआ।
3. 'मुझे बोलने दो' कविता संग्रह को उत्तर प्रदेष हिंदी संस्थान ने ई. सन 1979 को पुरस्कृत किया।
4. 'रैन बसेरा' कहानी संग्रह को उत्तर प्रदे"ा हिंदी संस्थान का य"ापाल पुरस्कार प्राप्त हुआ।
5. वली मुहम्मद और करीमन बी की कविताएँ कविता संग्रह को हिंदी अकादमी दिल्ली ने ई. सन 1991 को पुरस्कृत किया।
6. 'मुखड़ा क्या देखें' उपन्यास को ई. सन 2001 का मध्य प्रदे"ा साहित्य परि"ाद का वीर सिंहदेव पुरस्कार प्राप्त हुआ।
7. बनारस से ही 'कदम' नाम से प्रगति"ाील विचारधारा की एक साहित्यिक पत्रिका भी प्रकाि"ात की।

1.3 अब्दुल बिस्मिल्लाह का कृक्तित्व :

अब्दुल बिस्मिल्लाह साहब का जीवन और साहित्य अपने दे"ा की चिंताओं से उध्देलित, पारस्परिक ज्ञान, एवं विवेक से चैतन्य, लोक दृष्टि से संपन्न तथा क्रांतिकारी जीवन बोध के साथ जनवाद के प्रति बेहद

समर्पित रहा है। जीवन के कठिन मार्गों से गुजरते हुए उन्होंने जो कुछ देखा–भोगा, उसे ही साहित्य में वाणी दी। अब्दुल बिस्मिल्ला नयी पीढ़ी के बहुचर्चित एवं बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार है। उनके साहित्यिक जीवन की शुरूआत उपन्यास से हुई। उसके बाद कहानी, कविता, बालसाहित्य, पत्र, पत्रिकाओं का संपादन आदि विधाओं में उनकी प्रतिभा का पल्लवन हुआ है। अतः उनकी सृजन धर्मिता के आधार स्त्रोत के रूप में उनके संघर्ष"ाील जीवन उनके साहित्य में देखने को मिलता है।

1.3.1 उपन्यास साहित्य :

1. झीनी–झीनी बीनी चदरिया (1986)
2. जहरबाद (1987)
3. मुखड़ा क्या देखे (1996)
4. समर शेष है (2001)
5. दंतकथा (2007)
6. अपवित्र अख्यान (2008)
7. रावी लिखता है (2010)

1.3.2 कहानी संग्रह :

1. टुटा हुआ पंख (1981)
2. कितने कितने सवाल (1984)
3. रैन बसेरा (उ.प्र. हिंदी संस्थान के य"ापाल पुरस्कार से सम्मानित)(1989)
4. अतिथि देवो भव (1990)
5. जीनिया के फुल (1991)
6. रफ–रफ मेल (2000)

1.3.3 कविता संग्रह :

1. मुझे बोलने दो (उप्र.हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत 1977)
2. छोटे बुतों का बयान (1982)
3. वली मोहम्मद और करिमनबी की कविताएँ (दिल्ली हिंदी अकादमी द्वारा पुरस्कृत 1988)
4. किसके हाथ गुलेल (1990)

1.3.4 नाटक संग्रह :

'दो पैसे की जन्नत' नाटक संग्रह का प्रकासन ई. सन् 1997 में हुआ। इस नाटक संग्रह में कुल 4 नाटक संकलित है। जो निम्नलिखित है।

1. दो पैसे की जन्नत
2. कागज का घोडा
3. कलियुग का रथ
4. जनता खुद देखेगी

1.3.5 बालोपयोगी कहानियाँ :

1.3.6 पत्र–पत्रिकाएँ :

बनारस से ही कदम नाम से प्रगतिषील विचारो ंकी एक साहित्यिक पत्रिका प्रकाि"ात।

1.3.7 अनूदित रचनाएँ :

अब्दुल बिस्ल्लिाह ने अनेक रचनाएँ मराठी, पंजाबी, मलयालम, बांगला, जापानी तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं से अनूदित की।

1.3.8 आत्मकथा (समर भोश है) :

'समर शेष है' यह आत्मकथात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास में पुरी इमानदारी के साथ लेखक ने अपने बचपन से लेकर युवा अवस्था तक का वर्णन किया है। इस आत्मकथा की 'ुरूआत लेखक की जीवनयात्रा से शुरू होती है। वह चिलचिलाती हुई धूप में एक इक्के पर बैठकर जा रहे है। वह जिस रास्ते से बलापुर जा रहे थे, उसमें जगह–जगह पर कँटीली झाड़ियाँ थीं और दूर–दूर तक बीचों के झूंड दिखाई देते थे। लेखक जिस रास्ते से जा रहे थे, वह रास्ता नैनी से बलापुर का था। इक्का चल रहा था और बालक बिस्मिल्लाह नई कल्पनाओं में डुबा जा रहा था।

निश्कर्श :

अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपनी लगभग 25 वर्षों की साहित्यिक यात्रा में विविध विषयों से संदर्भित साहित्य के क्षेत्रों में सृजन कार्य किया है। उन्होंनें मुस्लिम समाज के साथ अन्य समाजों के अनछुए संदर्भों को उद्घाटित किया हैं। उनके साहित्य में पिछड़े और सामान्य वर्ग का ही अधिक चित्रण हुआ है। उन्होंने अपने लेखन की शुरूआत हाईस्कूल से की है। उन्होंने पहली कहानी 'खोटा सिक्का' नाम से लिखी है। उनके लेखन में कविता और कहानी की शुरूआत लगभग एक साथ हुई है। लेकिन सही अर्थों में उनके लेखन का आरंभ ई. सन् 1977 से हुआ है। तब से लेकर आज तक अब्दुल बिस्ल्लिाह निरंतर लिखते रहे हैं। इससे उनके बहुमुखी और सर्वगुण संपन्न व्यक्तित्व की पहचान होती है। अब्दुल बिस्मिल्लाह साहब कभी सफल और कभी असफल भी रहें है। लेकिन उन्होंने कभी भी अपने दिल को कमजोर नहीं होने दिया। वे एक कठोर परिश्रमी और गहन अध्येता रहे है। अंतरराष्ट्रीय ख्याति के अब्दुल बिस्मिल्लाह अपने प्र"ांसकों से घिरे रहते है।

संदर्भ सूची

1. फ्रान्सिस बेकान, उद्धृत, दिनकर का व्यक्तित्व, डॉ.प्रमिला, पृ. 8
2. फ्रान्सिस बेकान, उद्धृत, दिनकर का व्यक्तित्व, डॉ.प्रमिला, पृ. 8
3. हिंदी वि"व को"ा, डॉ. श्यामसिंह शि"ा, पृ. 150
4. मानक हिंदी शब्दको"ा, रामचन्द्र वर्मा, खण्ड पाँच, पृ. 124
5. मानक हिंदी "ाब्दको"ा, रामचन्द्र वर्मा, खण्ड पाँच, पृ. 124
6. उद्धृत, बाबा रसूल शेख, मुस्लिम समाज जीवन और अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास, पृ. 13
7. उद्धृत, बाबा रसूल शेख, मुस्लिम समाज जीवन और अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास, पृ. 14
8. समर शेष है, अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ. 4
9. मुखड़ा क्या देखे, अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ. 18
10. अतिथि देवो भवों, अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ. 125
11. उद्धृत, बाबा रसूल शेख, मुस्लिम समाज जीवन और अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास, पृ. 15
12. जिस दे"ा में गंगा बहती है, हिंदी भाषिक फिल्म का गीत,उद्धृत, बाबा रसूल शेख, मुस्लिम समाज जीवन और अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास, पृ. 15
13. झीनी–झीनी बीनी चदरिया, अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ. 78